शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नरेश मेहता के काव्य में सामाजिक प्रयोजन

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय
जैतवारा, सतना, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

श्री नरेश मेहता पौराणिक आख्यानों में नए अर्थ भरने में सिद्धहस्त हैं। वे अपनी काव्य रचना के लिए भारतीय संस्कृति के उद्गम स्रोत की ओर अपनी दृष्टि ले जाते हैं। वे हरेक प्रसंग में सामाजिक प्रयोजन की तलाश करते हैं। पहले प्रश्न उपस्थित करते हैं, फिर उनके उत्तर को खोजते हुए गहराई में उतर जाते हैं। उनके काव्य का मुख्य गुण उनकी मानवीय दृष्टि है। प्रस्तुत शोध पत्र में नरेश मेहता के काव्य में सामाजिक प्रयोजन पर विचार किया गया है।

भूमिका

व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध अविछिन्न है। व्यक्ति के समस्त गतिविधियाँ समाज सापेक्ष होती हैं। उनमें भी साहित्यकार का संवेदनशील मन समाज को केंद्र में रखकर चिंतन प्रस्तुत करता है। इसलिए प्रत्येक रचना का अपना एक प्रयोजन हुआ करता है। किसी भी कवि की सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण आधार है, उसकी समसामयिक दृष्टि और यथार्थ की पहचान। "जो कवि समसामयिक जीवन यथार्थ से असंपृक्त रहते हुए अपनी काव्य चेतना का विकास करना चाहता है। वह प्रायः शाश्वत सत्य के नाम पर वैयक्तिक चेतना का ही पोषण, संवर्धन करने लगता है। समसामयिक जीवन यथार्थ की पहचान कवि की सामाजिक चेतना के लिए ही नहीं, कविता की सार्थकता के लिए भी आवश्यक है। जिन कवियों की सामयिक जीवन यथार्थ से संपृक्ति खोखली अथवा उथली होती है, प्रायः वे उसे कविता के लिए अनावश्यक एवं महत्वहीन मानते हैं।"1

किसी भी रचना में निहित सामाजिक दृष्टि एवं कवि की सामाजिक चेतना का आज जो महत्व है, उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं। रचना की प्रभावशीलता ही नहीं उसके स्थायित्व का आधार भी रचना में निहित कवि की प्रखर सामाजिक चेतना है। वह चेतना जो व्यक्तिगत् संवेदनाओं और प्रतिक्रियाओं से बुनी जाती है, सामाजिक सन्दर्भ में अधिक महत्व नहीं रखती। रचना में शक्ति तभी आती है, जब वह सामान्य जनता के विकास के अनुकूल हो और सामान्य जनता पर दृष्टि डालने से पूर्व आवश्यक हो कि आपका दृष्टिकोण मानवतावादी है।

नरेश मेहता के काव्य में सामाजिक प्रयोजन

नरेश मेहता की सामाजिक चेतना का मूलाधार है, उनकी मानवीयता और मानवीयता का प्रमुख स्रोत है, जन संबद्धता। जो कवि अपने को जन से सम्बद्ध नहीं करता, वह प्रायः मानवीयता की स्थापना नहीं कर सकता। नरेश जी के खण्डकाव्य मानवता को ही प्रस्तुत करते हुए सामाजिक प्रयोजन को सिद्ध करते हैं। 'संशय की एक रात' की बात करें, तो इस खण्ड काव्य में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

राम के अंतर्द्वन्द्व के साथ-साथ कवि ने मानवता की रक्षा के लिए प्रभु से एक आग्रह किया है। रावण को बार-बार संदेश भिजवाना, शांति व सन्धि की बात करना, इन सबके मूल में मानव-रक्षा ही सामने आती है। राम इस तथ्य के पक्षधर रहे कि व्यक्तिगत हित के लिए निर्दोष जनता व्यर्थ में न मारी जाए। 'महाप्रस्थान' में कवि निश्चय ही युधिष्ठिर का सहारा लेकर कहते हैं कि :

"युद्ध तथा राज्य
किसी में भी
मेरी कोई रूचि नहीं रही .....
मैं राज्यान्वेषी नहीं
मूल्यान्वेषी रहा हूँ।"2

विश्व बन्धुत्व की भावना लिए 'प्रवाद पर्व' में कवि ने जिन मानवीय मूल्यों की रक्षा की बात कहीं है वह देखते ही बनता है। पूरा प्रवाद पर्व सिर्फ लोक वाणी व मानवता के ही इर्द-गिर्द घूम रहा है।

"इतिहास को वनस्पतियों की भांति
सम्पूर्ण मेदनी की
शोभा और गंध होने दो
डसे मानवीय अभिव्यक्ति का
औपनिषदिक पद दो।"3

'शबरी' में नरेश मेहता ने मानवता का उदात्त रूप प्रस्तुत किया है। एक भीलनी का अपने प्रभु के प्रति ऐसा समर्पण और प्रभु की अपने भक्त के प्रति ऐसी संवेदना क्या मानवता को पुष्ट नहीं करती ? मानव से केवल मानव की नहीं प्रकृति भी मानवतावादी चिन्तन से जुड़ जाती है-

"पशु-पक्षी
या हम-तुम कोई भी
इस पाहुन के सामने
कैसे निश्चल खिलखिलाते हुए
परस देते है।"4

'शबरी' रचना की प्रासंगिकता के बारे में स्वयं नरेश मेहता ने लिखा है. "जिस युग की यह कथा है उस समय सामाजिक स्तर पर भले ही वर्ण-व्यवस्था का विधान रहा हो पर व्यक्ति, कर्म के द्वारा वर्ण-मुक्त होने की चेष्टा कर सकता था। शबरी की कथा में यही वर्ण-मुक्त होने की चेष्टा है। यह ठीक है कि इसके लिए व्यक्ति को संघर्ष (?) करना ही होता था। जिस समाज में हम रह रहे हैं उसमें वर्ण व्यस्था प्रधान है। वर्ग-मुक्त होने की हमारी सबसे प्रमुख समस्या है। सामाजिक वर्ण व्यवस्था और वैयक्तिक कर्म विधान में एकता की चेष्टा सदा से कवी, विचारक, दार्शनिक और सुधारक करते आये हैं।...वस्तुत: काव्य-दृष्टि ही वह सेतु है जहां धर्म, दर्शन, राजनीति, इतिहास सबको एक साथ खडा किया जा सकता है।"5

'प्रार्थना-पुरुष' अर्थात् गांधी का सम्पूर्ण जीवन मानवता की रक्षा में व्यतीत हो गया। देश को जोड़ने में सत्य और अहिंसा उनके शस्त्र थे। महात्मा गांधी जी ने सत्य और अहिंसा से स्वतंत्रता के लिए हमेशा प्रयास किया और उसमें सफलता भी प्राप्त की, किन्तु इस देश का दुर्भाग्य कि जिस महापुरुष ने सारे विश्व को अहिंसा का पाठ पढाया, उसी की हत्या की गई। इस देश ने कभी भी व्यक्तित्व को परखने में अपनी सकारात्मक भूमिका अदा नहीं की।

नरेश मेहता ने जन-जन के दु:ख को बड़ी नजदीकी से देखा, उसको महसूस किया और मिथकों की आड़ लेकर मानवता की रक्षा के लिए उसे साहित्य समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। धर्म और विचार भी मानवता के बाधक न बनें इसके लिए युधिष्ठिर से कहलवा दिया। कि -

"धर्म और विचार को
स्वतंत्र रहने दो पार्थ !

अन्यथा यह समाज
रहने के योग्य
नहीं रह जाएगा ।"6

निष्कर्ष

नरेश मेहता की रचनाधर्मिता का अंतिम लक्ष्य समाज को मिथकीय कलेवर की माध्यम से नवीन दृष्टि प्रदान करना रहा है। पुराने विचारों में नए अर्थ भरना साहित्यकार का काम है। इस सम्बन्ध में ररेश मेहता लिखे हैं, "धर्म की चैतन्य असंगता और राजनीति की पदार्थिक आसक्ति दोनों का उचित संयोजन ही काव्यात्मक मानवीय दृष्टि है। इसीलिये काव्यात्मक मानवीय दृष्टि की सम्यक या समरसता की पूर्ण सृजनात्मक दृष्टि है - शेष सारी दृष्टियाँ सांप्रदायिक या आग्रही दृष्टियाँ होंगी।"7

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. तारसप्तक कवियों की समाज चेतना, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 264

2. महाप्रस्थान, नरेश मेहता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 97

3. प्रवाद पर्व, नरेश मेहता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 33

4. शबरी, नरेश मेहता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ 23

5 शबरी, नरेश मेहता, भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, षष्ठ संस्करण, 1986, पृष्ठ 9

6 साक्षात्कार-पत्रिका अगस्त सितम्बर, साहित्य अकादमी, भोपाल, 2008, पृष्ठ 197

7 शबरी, नरेश मेहता, भूमिका, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, षष्ठ संस्करण, 1986, पृष्ठ 9